RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 13वां अंक 52 अक्टूबर-दिसम्बर 2019 संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

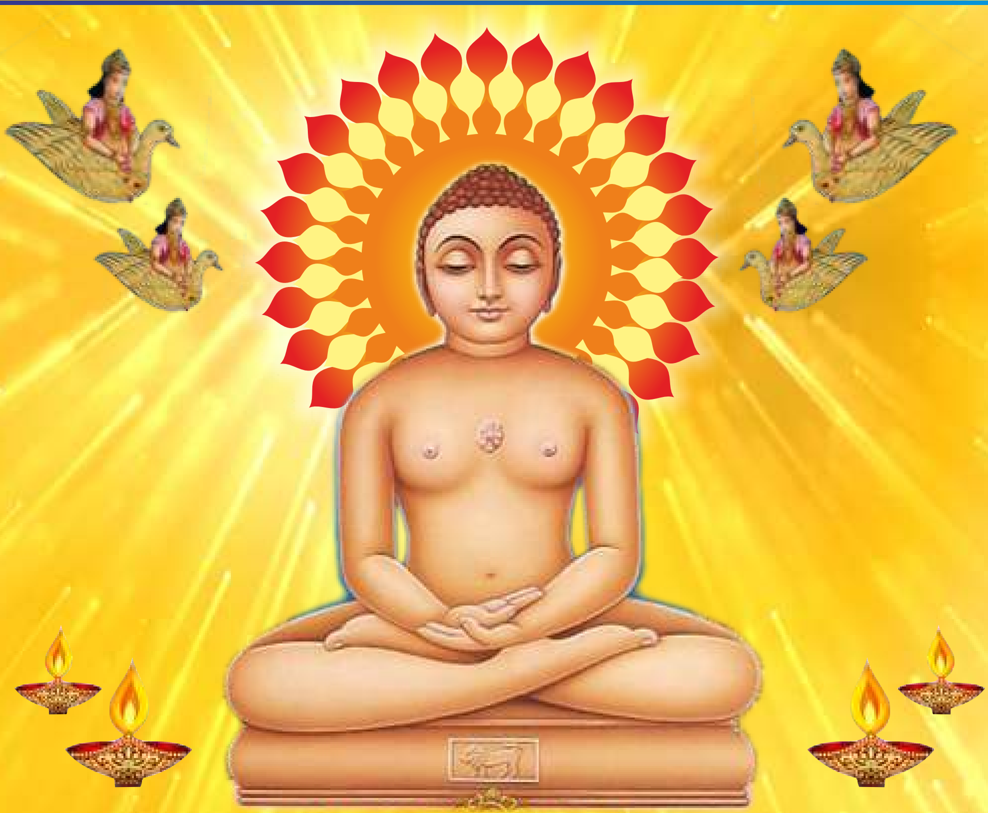

इस अंक में ...

प्रासंगिक संपादकीय
दीपावली पोस्टर
जन्मदिन उपहार योजना
घटनायें जो आपके हृदय को छू लें
गौरवशाली इतिहास के साथ बहुत कुछ

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

पहले और अब

1996.
2016.

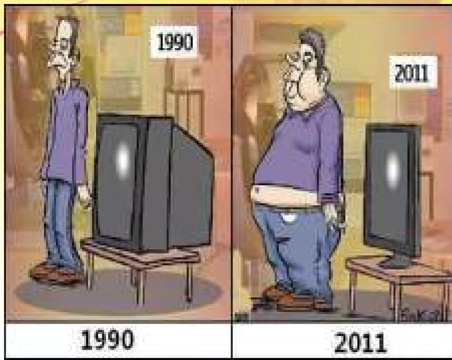
1990
2011
1990
2011

1913
2013

1996
2016

1968
2018

1940
2019

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

अक्टूबर-दिसंबर 2019

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1	15	पाव – ब्रेड	18
2	यदि आप भी मोर पंख ../सोनगढ़ धर्मशाला	2	16	मोबाईल का दुरुपयोग	19–20
3	संपादकीय	3–4	17	शराबी कौन ?	21
4	कविता– अपेक्षायें	5	18	एक आत्म साधिका .. / स्वप्न	22–23
5	रावण, सीता और लक्ष्मण	6, 8	19	मध्य एशिया में जैन धर्म	24–25
6	संस्कारों का बल	7–8	20	प्रश्न आपके आगम के उत्तर	26
7	भक्ति / क्षण में वैराग्य	9	21	समाचार	27–28
8	लक्ष्मी पूजा / कुष्ट रोग दूर ...	10	22	बेटे की कीमत	28
9	कला / गुणवान पत्नी	11	23	जन्मदिन	29
10	फोन पर सबसे पहले हैलो / उदारता	12	24	प्लास्टिक का प्रयोग न बाबा न	30
11	कविता – मोबाईल की विदाई	13	25	सावधान	31
12	मोबाईल के कारण बेटी ने लिये....	14	26	चित्रों से समझिये	32
13	मायाचार का दुष्परिणाम	15			
14	पटाखा पोस्टर	16–17			

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

यदि आप भी **मोर पंख** प्रयोग करते हैं तो ये चित्र देखकर दिल दहल जायेगा

आज मोर के पंखों का हमारे घरों में सजावट के रूप में प्रयोग होने लगा है। पूरे देश में मोर पंखों की मांग बढ़ी है और इसके साथ ही देश के राष्ट्रीय पक्षी मोर की संख्या कम होती जा रही है। मोर पंख बेचने वाले कहते हैं कि ये पंख मोर अपने आप समय के साथ छोड़ देता है हम उन्हीं पंखों को बेचते हैं। परन्तु ये चित्र अलग कहानी कह रहे हैं। कुछ धन के लोभी मोरों को मारकर उनके पंख बेचते हैं और उस मोर मांस खा लेते हैं। सोचिये विचारिये और त्यागिये ..

सोनगढ़ रेल्वेस्टेशन पर आधुनिक वातानुकूलित प्रतीक्षा कक्ष का शुभारंभ

पूज्य गुरूदेवश्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सोनगढ़ के रेल्वे स्टेशन पर 15 अगस्त को आधुनिक वेटिंग का उद्घाटन किया गया। गुरूदेवश्री के द्वारा उद्घाटित तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न संस्था गर्जतो ज्ञायक ट्रस्ट परिवार के द्वारा लगभग 50 लाख रुपये की लागत से इस वेटिंग रूम का निर्माण किया गया है। भारतीय रेल्वे के इतिहास में प्रथम बार किसी धार्मिक संस्था के सहयोग से रेल्वे स्टेशन पर वेटिंग रूम में निर्माण किया गया है। लगभग 1500 वर्गफुट में निर्मित

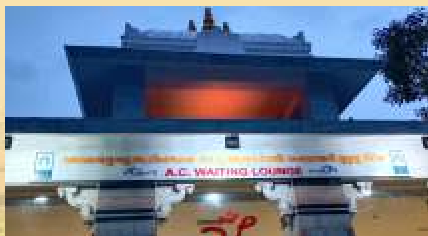

इस हॉल में 85 यात्रियों के बैठने की सुविधा है। साथ ही इसे एयरपोर्ट की तरह सुविधा सम्पन्न बनाया गया है। इसमें रेल्वे का इतिहास, जैन महापुरुषों के साथ पूज्य गुरूदेवश्री का विशाल चित्र लगाया गया है। इस महनीय कार्य में मुम्बई बोरीवली निवासी विद्वान श्री हितेशभाई चौवटिया का भूमिका सराहनीय रही।

संपादकीय

धन और लोकप्रियता के उन्माद बेहोश समाज

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरू जैन शासन का आधार सदा से रहे हैं। इनके द्वारा प्रतिपादित जैन सिद्धान्तों का पालन कोई भी जीव स्वयं वीतरागी होकर पूर्ण सुखी हो सकता है। अनादि काल से प्रत्येक जीव सुख और शांति की तलाश में भटकता रहा है। अनंत जीवों ने सुख और शांति का माध्यम साधन और सुविधाओं का माना और उनकी यात्रा कभी पूरी नहीं हो पाई। आज भी समाज में धर्म के नाम पर धन और लोकप्रियता की दौड़ चल रही है। समाज में विशाल मंदिरों का निर्माण चरम पर है। भारत के किसी भी तीर्थ पर जायें तो दीवालों और बोर्ड पर वीतरागी भगवन्तों के सन्देश नहीं बल्कि संस्था की निर्माणाधीन योजनायें और उनकी सहयोग राशि लिखी होती है। समझ में नहीं आता कि आज सम्मेदशिखर से लेकर छोटे तीर्थों की योजनायें सैकड़ों वर्षों में भी पूरी क्यों नहीं पाईं? आज हर मंदिर में सुबह से शांतिधारा के नाम पर बोलियों का व्यापार शुरू हो जाता है और निर्धन व्यक्ति असहाय अपने दीन अनुभव कर एक कोने में चुपचाप खड़ा होकर अपने भाग्य को कोसता रहता है। जिस वीतरागी प्रभु के दरबार में स्वाबलंबन और स्वाधीनता का शंखनाद होना चाहिये वहाँ दीनता और हीनता की भावना उभर रही है।

छोटे-बड़े तीर्थों की परिकल्पना करने वाले शायद अपने जीवनकाल में भी इन तीर्थों को पूरा नहीं कर पायेंगे पर उनके जीवन का समाप्ति तो निश्चित हो जायेगी और हर तीर्थ के साथ पल्लवित हों रहीं हैं भयंकर कषायें और राग-द्वेष और ईर्ष्या। इसे समाप्त करने में सैकड़ों क्षमावाणी के पर्व भी कम पड़ जायेंगे। सबको समाज कल्याण की चिंता है स्वयं कल्याण की नहीं।

आज पर्वों या धार्मिक आयोजनों की सफलता विशुद्धि से नहीं बल्कि धन संग्रह से मानी जा रही है। जिनमंदिर के अन्दर पाषाण के भगवान विराजमान करने में लाखों रुपये देने वाले श्रेष्ठी मंदिर के बाहर असहाय साधर्मी को सौ रुपये देने में भी संकोच करते हैं। कुछ साधर्मियों और दो-चार संस्थाओं को छोड़कर सभी को जीवंत साधर्मी से अधिक पाषाण की प्रतिमा अधिक जीवंत लगती है। कहीं जिनमंदिर की स्थापना में अपने नाम, पद और प्रतिष्ठा की गलत अभिप्राय तो नहीं है क्योंकि आज सभी लोकप्रिय होने की अविवेकी दौड़ में शामिल हो गये हैं। इसमें लौकिकजनों की क्या बात कहें? स्वनाम धन्य विद्वान भी लोकप्रियता के मायाजाल में शामिल हो गये हैं।

सामान्यजनों का परिग्रह धन-मकान आदि हैं वैसे ही विद्वानों का परिग्रह शास्त्र हैं - इस सूक्ति के अनुसार जहाँ एक ओर सामान्यजन टिकटॉक जैसे एप से अशोभनीय हरकतें करके लोकप्रिय होना चाहते हैं वैसे ही धर्म क्षेत्र में लाईक, व्यूज और कमेन्ट्स की

क्षुधा परेशान कर रही है और यह महामारी हमारे बच्चों में फैल रही है और आश्चर्य तो तब होता है जब जन्म-मरण के अभाव की बात कहने वाले, शरीर और आत्मा को भिन्न जैसे मंगल सिद्धान्तों का प्रचार करने वाले और इनके अनुमोदक जन्म दिवस की बधाईयाँ लेते हैं और देते हैं। जन्म दिवस तो उन महापुरुषों का महान होता है जिनका रोम-रोम और जीवन का हर क्षण जिनवाणी की प्रभावना में समर्पित है परन्तु छद्म प्रभावक तीर्थ यात्राओं में भगवान और तीर्थों को गौण कर स्वयं की फोटो सोशल मीडिया पर पर पोस्ट स्वयं को धार्मिक सिद्ध करना चाहते हैं। विचारणीय बात यह है कि क्या हम लौकिक शिष्टाचार की आड़ में अपनी मिथ्या मान्यता को ही पुष्ट कर रहे हैं...!

जीवन साथी के जन्मदिवस पर अथवा वैवाहिक वर्षगांठ पर परस्पर सोशल मीडिया पर बधाई दी जा रही है। नितांत व्यक्तिगत जीवन को बाजारु बना दिया गया है। पति - पत्नी के स्नेहिल निजी पलों को सार्वजनिक कर रूप के लोभियों को आमंत्रण दे रहे हैं, सच में यह कुशील का सेवन है। क्या हम शुभकामनाओं का यह व्यापार अपने घरों तक सीमित नहीं कर सकते ? घरों में साड़ी-घूंघट में रहने वाली, परिवार में सास-ससुर की मर्यादाओं का पालन करने वालीं बहुयें बाहर जाते ही जींस-टी शर्ट, कैपरी, स्लीवलेस आदि में अपने को मुक्त अनुभव करतीं हैं। व्यक्तिगत स्वतंत्रता की दुहाई देने वालों से निवेदन है कि हाँ! ये आपका अधिकार है, पर इसे सार्वजनिक करके हम कौन से सामाजिक दायित्व का पालन कर रहे हैं ? आश्चर्य है इस कार्य में बुद्धिजीवी कहे जाने वाले विद्वान भी शामिल हो गये हैं।

जैन समाज की सामाजिक संस्थायें सामाजिक संगठन के नाम पर सदस्यों की पूल पार्टी, सिंगापुर, बैंकाक जैसे निर्लज्ज देशों की यात्रायें कर रहीं हैं। घर में आदर्श पुत्र और आदर्श बहू की भूमिका का निर्वाह करने वाले स्वीमिंग पूल में पूरे समूह के साथ अर्द्धनग्न दिख रहे हैं। यह उन्मुक्तता हमारे बच्चों पर गहरा प्रभाव छोड़ रही है, इसके परिणाम आने पर हमारे पास सिवाय पछताने के कोई उपाय नहीं होगा। आप मेरे विचारों से आप सहमत हों यह जरूरी नहीं, पर विचार तो किया ही जा सकता है।

इस लोकप्रियता की लत हमारे परिवार के संस्कारों का सर्वनाश करें, इससे पहले हमें सावधान होना होगा। हमें और बच्चों को समझना होगा कि जीवन लाईक और कमेन्ट्स से नहीं चलता, फेस बुक की दोस्ती बड़ा भ्रम है और इस दुर्लभ मनुष्य भव का हर समय कीमती है। इसके प्रत्येक पल का सदुपयोग करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। साथ ही साधर्मियों को आर्थिक संबल मिले, जिनशासन घर-घर तक पहुँचे, पाठशालायें जीवन्त हों, हर घर पाठशाला का नारा बुलन्द हो, समाज आत्मकल्याण को जीवन का उद्देश्य बनाये - ऐसी योजनाओं और प्रयासों की आवश्यकता है। ऐसे ही प्रयासों से जिनशासन जयवंत रहेगा।

- **विराग शास्त्री**, जबलपुर

अपेक्षायें

अपेक्षायें बड़ों को छोटों से, छोटों को बड़ों से,
पिता की पुत्रों से, पुत्रों की पिता से,
समाज की साधुओं से, साधुओं की समाज से,
विद्वान की साधर्मियों से, साधर्मियों को विद्वान से।

हर क्षेत्र में खेल तो इनका ही है चल रहा,
जब नहीं होतीं हैं पूरी तो खाई खोद लेते हैं हम निराशा की
तनाव और अनेकानेक परेशानियों की,
और हर पल रहते हैं दुःखी ही ।

असली जरूरत है निर्भार होने की,
उसकी तो हम करते हैं उपेक्षा, और दूसरों से करते रहते हैं अपेक्षा,
फिर बोझ तले उसके रहते चिंतित,
हो जाते फिर व्यथित और व्यवहार हमारा हो जाता है दूषित।

अपेक्षाओं से गिरता है आत्मबल, भूल जाते हैं हम अक्सर अपने कर्तव्य,
और देखते रहते इसने-उसने क्या किया? क्यों किया? कैसे किया?
फिर कुछ विपरीत होते देख दुःखी होते बार- बार
पीड़ायें स्वयमेव भोगते बारम्बार।

इससे उबरने के लिये देते हमें सच्चे मंत्र वचन जिनेन्द्र के,
परन्तु हम उनकी भी कर देते हैं उपेक्षा,
कहते हैं वो हमसे, "बिना अपेक्षा करो अपना कर्तव्य,"
परन्तु हम तो जिनेन्द्र से भी अपेक्षायें करने लगते हैं।

यदि लक्ष हमारा है सुख शान्ति, होना चाहते हैं हम निश्चिन्त
तो कभी मत देखो बाहर में कौन क्या करता है?
देखो सिर्फ अपने को और अपने कर्तव्यों को, टटोलो अपने अन्तर्मन को

आशा नहीं रखें, अपेक्षा भी न रखें, सहज रहकर बनें हम आत्मनिर्भर,
यही तो निर्भार होने की है सच्ची कला,
जिससे आने वाला कल होगा बहुत सुखकारा मंगलकारी

प्रियदर्शन जैन, नागपुर

रावण, सीता और लक्ष्मण का भविष्य क्या ?

हम सभी राम के जीवन से सामान्य रूप से परिचित हैं। पद्मपुराण ग्रन्थ में आचार्य रविषेण ने राम आदि सभी जीवों के जीवन की सभी घटनाओं का वर्णन किया है। सारा देश जिस रावण को बुरा मानकर उसके पुतले जलाकर अपनी शान समझता है आप जानते हैं उसका भविष्य क्या है? जानिये प्रमुख पात्रों का भविष्य -

राम - ने उसी भव में मुनि दीक्षा ली और आत्म साधना करके केवलज्ञान प्राप्त करके सभी कर्मों का नाश करके मोक्ष पद प्राप्त किया।

सीता - ने आर्यिका दीक्षा लेकर बहुत तप किया और बारहवें स्वर्ग में प्रतीन्द्र देव के रूप में जन्मी। वर्तमान में सीता का जीव प्रतीन्द्र है। सीता का समाधिमरण राम के मोक्ष जाने के पूर्व ही हो गया था। उसने देव लोक में अपने ज्ञान से जाना कि श्री राम ध्यान में लीन हैं। सीता को उनके साथ धर्मचर्चा करने की भावना हुई। उसने सीता का रूप बनाया और राम पर उपसर्ग करके उन्हें विचलित करने का प्रयास किया। परन्तु राम अपने ध्यान में लीन रहे और ध्यान से नहीं डिगे। राम को केवलज्ञान हो गया। तब सीता के जीव ने राम से क्षमा याचना की। फिर केवलज्ञानी राम से लक्ष्मण और रावण के विषय में पूछा - वे दोनों कहाँ हैं? तब भगवान की वाणी में आया कि लक्ष्मण का जीव चौथे नरक में हैं और रावण का जीव तीसरे नरक में है। नियम के अनुसार कोई भी देव तीसरे नरक से आगे नहीं जा सकता इसलिये सीता के जीव प्रतीन्द्र ने तीसरे नरक जाकर रावण को आत्मकल्याण का उपदेश दिया। आश्चर्य की बात यह है कि जिस रावण ने सीता का अपहरण किया, उसे उसके पति से दूर किया, जिस रावण के कारण उसे अग्नि परीक्षा देनी पड़ी और इसके बाद भी उसे राम के द्वारा वन में छुड़वा दिया उसी रावण के प्रति इतना साधर्मी वात्सल्य। यह परिणामों की विचित्रता भी अद्भुत है।

अब आगे क्या होगा -

1. आगामी भव में लक्ष्मण और रावण दोनों मनुष्य और तिर्यन्च के अनेक भव धारण करते हुये हर बार एक दूसरे से बैर भाव से लड़ते हुये और एक दूसरे को मारेंगे और अंत में सगे भाई बनेंगे और इनमें बहुत प्रेम होगा।

शेष भाग पेज नं. 8 पर

संस्कारों का बल

सूत्रधार - मैं जीव हूँ, मुझमें ज्ञान है, मैं ज्ञान से जानता हूँ। शरीर अजीव है, शरीर में ज्ञान नहीं है, शरीर कुछ नहीं जानता। मेरा आत्मा कभी नहीं मरता, मैं अजर-अमर अविनाशी तत्व हूँ। ऐसी पाठशाला के संस्कारों से संस्कारित एक बालक के साथ घटित सत्य घटना पर आधारित यह लघु नाटिका है।

एक सम्पन्न जैन परिवार के दस वर्ष के बालक का डाकुओं ने अपहरण कर लिया और अपने घर के तलघर के कमरे में बंद कर दिया। देखते हैं फिर आगे क्या हुआ -

सरदार - कहाँ है वो बच्चा! शेरा ! जरा उसे लेकर आना।

शेरा - जी सरदार। मगर सरदार! उसे बच्चे ने बहुत परेशान कर दिया है। दो दिन से न कुछ खाया है, न पिया। पूरे समय कोई मंत्र पढ़ता रहता है। यदि मर गया तो हमें एक रुपया भी नहीं मिलेगा।

सरदार - क्यों? आखिर उसके न खाने-पीने का क्या कारण है ? क्या उसे हमारा खाना पसंद नहीं आ रहा ?

शेरा - सरदार! वो कहता है ये पानी बिना छना हुआ है, मैं नहीं पी सकता। ये भोजन अशुद्ध है, मैं नहीं खाता। पता नहीं कैसी-कैसी बातें करता है? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता। मैं अभी उसे ऊपर लेकर आता हूँ।

(शेरा बच्चे को धक्का देकर ऊपर लाता है और कहता है चल सरदार ने तुझे बुलाया है। बच्चे के हाथ बंधे हैं और आंखों पर पट्टी बंधी हुई है।)

सरदार - क्यों रे! बहुत परेशाान कर रखा है, दो दिन पूरे हो गये। तूने कुछ नहीं खाया-पिया और तेरे बाप ने एक रुपया भी नहीं भेजा। यदि आज रुपया नहीं भेजा तो तुझे गोली से उड़ा देंगे। **(इतना कहकर सरदार बच्चे के माथे पर बंदूक रखता है।)**

बच्चा - (निडरता के साथ) मार दो, मार डालो मुझे। मैं मरने से नहीं डरता। तुम मेरे शरीर को तो मार सकते हो, पर मेरी आत्मा को नहीं।

(सरदार के हाथ से बन्दूक नीचे गिर जाती है।)

सरदार - क्या कहा? मेरे शरीर को मार सकते हो, मेरी आत्मा को नहीं। बच्चे! तूने ये आत्मा की बड़ी-बड़ी बातें कहाँ से सीखीं ?

बच्चा - मेरे मंदिर में पाठशाला लगती है, वहाँ हमें ऐसी बातें सिखाईं जातीं हैं। आप भी चलो मेरी पाठशाला, ये हिंसा और चोरी-डकैती करना सब भूल जाओगे। मेरी पाठशाला की दीदी कहती हैं - सभी जीव भगवान बन सकते हैं। आप भी भगवान बन सकते हो।

सरदार - बच्चा ! तू बड़ी प्यारी बातें करता है। आज पहली बार किसी ने मुझे भगवान कहा है। हम गल्ती से तुझे यहाँ पकड़ लाये। चल! तुझे तेरे घर पहुँचा देता हूँ।

सूत्रधार - इसके बाद डाकुओं का हृदय परिवर्तन हो गया। आप मानो या न मानो, पर रात के दो बजे अंधेरे में डाकुओं का सरदार स्वयं उसके घर के पास उसे छोड़ दिया और जब तक बच्चा घर के अन्दर नहीं चला गया, तब तक वहीं खड़ा रहा। आप भी अपने बच्चों की हर तरह से सुरक्षा चाहते हैं तो पाठशाला के सुरक्षा चक्र में शामिल करें, जिससे उनका यह भव तो सुरक्षित होगा ही, अनंत काल का भविष्य सुरक्षित हो जायेगा।

रावण, सीता और लक्ष्मण का भविष्य क्या ?

पेज नं. 6 का शेष भाग....

2. फिर ये स्वर्ग में देव बनेंगे।
3. फिर में मनुष्य के रूप में जन्म लेंगे।
4. उसके बाद स्वर्ग में देव होंगे।
5. इसके अगले भव में राजा के पुत्र होंगे और दिगम्बर दीक्षा लेंगे।
6. इसके बाद साथ में सातवें स्वर्ग में देव बनेंगे।
7. इस समय सीता का जीव भरत क्षेत्र में चक्रवर्ती बनेगा। रावण और लक्ष्मण के जीव उनके इन्द्र रथ और मेघरथ नाम के पुत्र बनेंगे।
8. इसके बाद तीनों मरकर अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र बनेंगे।
9. वहाँ से निकलकर रावण का जीव तीर्थंकर और सीता का जीव उनका गणधर बनेगा। लक्ष्मण का जीव पुष्कर द्वीप में महाविदेह में चक्रवर्ती के साथ तीर्थंकर बनेगा।

सुविचार

- **यह मत सोचो कि यदि हम ऑक्सीजन नहीं लेगें तो ऑक्सीजन का क्या होगा? बल्कि यह सोचो कि यदि हम ऑक्सीजन नहीं लेंगे तो हमारा क्या होगा ? ठीक इसी तरह यह मत सोचो कि हम मंदिर नहीं जायेंगे तो इन मंदिरों का क्या होगा ? बल्कि यह सोचो कि हम मंदिर नहीं जायेंगे तो हमारा क्या होगा?**

भक्ति

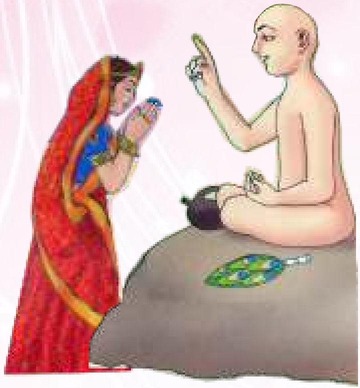

चम्पानगर के श्रेष्ठी श्री धर्मघोष ने वैराग्यपूर्वक मुनिदीक्षा ले ली। वे एक माह उपवास करते और एक दिन आहार करते। एक बार एक माह के उपवास के बाद वे आहार के लिये जा रहे थे परन्तु उस रास्ते पर घास उग रही थी इसलिये गंगा नदी किनारे एक विशाल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करने लगे। तभी उनकी तपस्या से प्रभावित होकर एक देवी आई उसे अपने ज्ञान से मालूम चला कि मुनिराज प्यासे हैं उन्होंने आज आहार भी नहीं किया। वह पानी से भरा एक कलश सामने रखकर बोली - हे मुनिवर! आप इस कलश का पानी पीकर अपनी प्यास शान्त कीजिये। मुनिवर बोले - देवी! यह हमारे लिये अयोग्य है।

देवी को यह सुनकर कौतुहल हुआ - भयंकर प्यास की तकलीफ होते हुये भी मुनिवर मेरे द्वारा लाया हुआ पानी नहीं पी रहे हैं। इसका कोई विशेष कारण होना चाहिये।

वह तुरन्त पूर्व विदेह में विराजमान तीर्थंकर के समवशरण में गई और भगवान से प्रश्न किया तो भगवान बोले - मुनिराज देव-देवियों के द्वारा लाया हुआ आहार-जल ग्रहण नहीं करते। देव-देवियाँ भगवान की पूजा-भक्ति आदि कार्य तो कर सकते हैं।

तीर्थंकर वाणी सुनकर देवी फिर गंगा नदी के पास आई और उसने भक्ति के साथ मुनिराज के ऊपर शीतल जल की वर्षा कर दी। मुनिराज शुक्लध्यान में लीन थे। उन्होंने चार घातिया कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया और उसके बाद चार अघातिया कर्मों का नाश करके वे सिद्ध बनकर अनन्त काल के लिये सिद्धशिला पर विराजमान हो गये।

क्षण में वैराग्य

मिथिला का राजा पद्मरथ एक बार सूर्याभ नगर में गया। वहाँ सुधर्म नामक गणधर विराजमान थे। राजा ने उनके दर्शन किये और उनका उपदेश सुना। उपदेश सुनकर उसे बड़ा सन्तोष और आनन्द हुआ। उसने विनय भाव से कहा - भगवन ! क्या तीनों लोकों में ऐसा कोई व्यक्ति है जो आपके समान उपदेश दे सके । गणधर बोले - हाँ हैं। मेरे समान नहीं, मुझसे भी अधिक जगतगुरु त्रिलोकपूज्य भगवान वासुपूज्य चम्पापुर नगरी में विराजमान हैं। राजा बोला - यदि वे आपसे भी बड़े हैं तो मैं उनके दर्शन अवश्य करूँगा। राजा ने यह कहकर भोगों का त्याग कर दिया और भगवान के दर्शन के लिये चल पड़ा।

रास्ते में विश्वानल देव ने उन पर बहुत उपसर्ग किये पर राजा उससे नहीं घबराये और तीर्थंकर वासुपूज्य के चरणों में जा पहुँचे। उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और उन्होंने वहीं दिगम्बर दीक्षा ले ली और वे भगवान वासुपूज्य के गणधर बने और अन्त में पद्मरथ गणधर ने अष्टकर्म को नाशकर मोक्ष पद प्राप्त किया।

लक्ष्मी पूजा महंगी पड़ी

इन्दौर के एक सठजी ने अपना मान्यता अनुसार लक्ष्मी पूजन की और उनके द्वारा जलाये गये दीपकों से पूरा घर प्रकाशमय हो गया। सभी को उन्होंने मिठाई बांटी। किसी मित्र की सलाह पर उन्होंने घर के सभी दरवाजे खोल दिये क्योंकि मित्र का कहना था कि दीपावली को लक्ष्मी रात में आती हैं और यदि घर के दरवाजे बन्द मिलें तो वे वापस लौट जाती हैं। घर वाले रात को बहुत देर तक लक्ष्मी का इंतजार करते रहे, सुबह 4 बजे तक इंतजार करते-करते सभी सदस्य सो गये। उसी समय चोर आये और पूजन के लिये निकाले गये सारे आभूषण और रुपये चुराकर ले गये। उनकी लक्ष्मी पूजा मंहगी पड़ी।

सार की बात यह है कि धन का आना और जाना अपने पुण्य-पाप कर्म के उदय के अनुसार होता है। इसलिये हमें किसी मिथ्या मान्यता से बचकर रहना चाहिये।

कुष्ठ रोग दूर कैसे हुआ ?

कोटीभट श्रीपाल और उनके 700 साथियों का कुष्ठ रोग पाप का उदय टल जाने से नष्ट हो गया। श्रीपाल से उनके साथियों से पूछा - क्या आपने कुष्ठ रोग दूर करने के लिये महारानी मैना से सिद्धचक्र विधान करवाया था ? राजा श्रीपाल ने उत्तर दिया - सांसारिक कामना लेकर भगवान की पूजा करना तो पाप भाव है। पाप भाव से पुण्य बंध कैसे हो सकता है ? तब संकट भी कैसे टल सकता है? भगवान की पूजा तो भगवान बनने के लिये अर्थात वीतरागता प्राप्त करने के लिये की जाती है, उससे वीतराग भाव के साथ सहज ही पुण्य का बंध हो जाता है, जिससे संकट टल जाते हैं और हमें अनुकूलता मिलती है।

एक मंदिर- एक प्रतिमा बाकी धन संस्कार, शिक्षा और स्वास्थ्य पर

कला

बादशाह अकबर के महामंत्री अब्दुल रहीम खानखाना से उनके सेवक ने हाथ जोड़कर कहा - हुज़ूर ! एक विद्वान आपसे भेंट करना चाहता है। वह काफी देर से महल के बाहर आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है। वह लोहे से सोना बनाने की विद्या जानता है इसलिये वह आपसे एकांत में मिलना चाहता है।

महामंत्री बोले - उससे जाकर कहो कि वह तुरन्त यहाँ से चला जाये। मैं सोना बनाने का तरीका नहीं सीखना चाहता। उस समय खानखाना के एक मित्र वहीं बैठे थे। उन्होंने कहा - उसे बुलाकर प्रदर्शन देखने में क्या परेशानी है ? तब खानखाना बोले - मेरे प्यारे मित्र! आप बहुत सज्जन हैं। यह कोई धूर्त और पाखण्डी मालूम होता है। उसने सोचा होगा कि चलो अकबर के महामंत्री को मूर्ख बनाकर रुपये लेकर आयेंगे। यदि वह सच में लोहे से सोना बनाने की कला का जानता होता तो उसे मेरे पास आने की जरूरत ही नहीं थी। वह स्वयं सोने से लोहा बनाकर राज्य का सबसे धनवान व्यक्ति बन जाता।

गुणवान पत्नी

प्रसिद्ध विद्वान पण्डित गोपालदासजी बरैया की पत्नी स्वभाव से बहुत तेज थी। एक बार एक व्यक्ति उनसे मिलने उनके घर आया तो देखा कि उनकी पत्नी पण्डितजी पर जोर-जोर से चिल्ला रहीं हैं और पण्डितजी जबाब न देकर मौन खड़े हुये हैं। जब उनकी पत्नी चली गई तो उस व्यक्ति ने पण्डितजी से पूछा - आपकी पत्नी इतनी बातें सुनाती रहीं और आप बिल्कुल चुप रहे। आखिर क्यों ?

पण्डितजी गम्भीरता से उत्तर दिया - भाई! वह मेरे लिये भोजन बनाती है, मेरे गन्दे कपड़े धोती है, मेरी सेवा करती है, घर के सारे काम करती है और सबसे बड़ी बात वह मुझे क्षमा सिखाती है तो इतनी गुणवान पत्नी के उपकार भूलकर उससे लड़ाई करना मुझे अच्छा नहीं लगता।

फोन पर सबसे पहले हैलो (Hello) क्यों ?

आज सभी लोग **हैलो** कहकर मोबाइल या फोन पर बात शुरु करते हैं। क्या आप **हैलो** का अर्थ जानते हैं या हैलो क्यों कहा जाता है ? और इसकी शुरुआत कब हुई ? यदि ये कहा जाये **हैलो** किसी का नाम है आप तो सोच में पड़ जायेंगे। तो आइये इसका रहस्य जानते हैं। आप जानते होंगे कि फोन का आविष्कार ग्राहम बेल ने किया। ग्राहम बेल की प्रेमिका का नाम था- मारग्रेट हैलो। जब ग्राहम बेल ने सबसे फोन का प्रयोग करके दिखाया तो उन्होंने अपनी गर्लफ्रेन्ड (प्रेमिका) को फोन लगाया और उसे **हैलो** कह**कर** बात करना शुरु की। तबसे यह शब्द प्रचलित हो गया।

दुर्भाग्य है फोन पर बात करने वाले 90 प्रतिशत लोग अज्ञान के कारण व्याभिचारी स्त्री के नाम **हैलो** शब्द का प्रयोग करते हैं। हमें अपनी जैनत्व की संस्कृति का सुन्दर शब्द **जय जिनेन्द्र** का उपयोग करना चाहिये।

उदारता

गुजरात के धौलनगर के महाराज वीरधवल एक दिन भोजन करने के बाद सो रहे थे और उनका सेवक उनके पैर दबा रहा था। राजा को सोता हुआ देखकर सेवक ने पैर की अंगुली से रत्न की अंगूठी निकालकर मुंह में छिपा ली। राजा को इस बात का पता था पर उन्होंने सेवक से कुछ नहीं कहा।

दूसरे दिन उन्होंने वैसी ही दूसरी अंगूठी पहन ली। दूसरे दिन पैर दबाते समय सेवक ने फिर अंगूठी निकाली तो राजा बोले - अब यह अंगूठी तो रहने दो। कल जो अंगूठी तुमने निकाली थी वह मैं तुम्हें दे चुका। यह सुनकर सेवक घबराकर रोते हुये उनके चरणों में गिर पड़ा। राजा बोले - डरो मत, इसमें दोष मेरा ही है। कम वेतन से तुम्हारा काम नहीं चलता होगा इसलिये तुमने चोरी की है। आज से तुम्हारा वेतन दुगुना करता हूँ। अब कभी चोरी नहीं करना।

मोबाईल की विदाई

मेरी जिद पूरी करने में पापा भी चकराये।
जिद छोड़ो बेटा तुम प्यारे मम्मी भी समझाये।
पर मेरे गुस्से और जिद के आगे हार गये थे सारे,
दादा - दादी मान गये थे वे थे मेरे प्यारे ।।

मनोरंजन के बिना ये दुनिया फीकी-फीकी लगती।
बिन मोबाइल के जीवन में बात अधूरी लगती।।
मेरा भी मोबाइल आया, जो चाहूँ वो देखूँ।
व्हाट्सएप और फेसबुक पर दुनिया सारी जानूँ ।।

नये दोस्तों की नई बातों से दिन भर बहलाता।
मोबाइल को हाथ में लेकर मैं पीता और खाता।।
मोबाइल ही दोस्त बन गया, साथ में सोता-उठता।
मोबाइल लेकर जब चलता, गौरव मुझको आता।।

कुछ दिन बीत गये यूं हंसते, संकट बड़ा है छाया।
सिर दर्द की हुई बीमारी, चश्मा आंख पर आया।
आये एग्जाम फाइनल मेरे, पेपर कठिन है आया।
सोचा कुछ था हाय अब, कुछ का कुछ लिख पाया।

फेल हुआ डैडी से मेरी, मेरी जमकर हुई पिटाई।
नालायक फेल हुआ क्यों, नाक मेरी कटवाई।
दादा ने समझाया मुझको, बात समझ में आई।
मोबाइल ये आफत का डिब्बा, इसकी करूँ विदाई।।

वीर निर्वाण महोत्सव

वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव, मंगलमय यह आया।
मोक्षमार्ग की शिक्षा देता, सबके मन को भाया।
नहीं जलायें कोई पटाखे, नहीं पाप का कार्य करें।
नहीं फुलझड़ी अनार का दाना, न हिंसा का पाप करें।।
सत्य अहिंसा धर्म हमारा, इसकी रक्षा करना।
वीर प्रभु से शिक्षा लेकर, मन में धारण करना।।
सम्यग्ज्ञान के महादीप से, आत्मगुणों को पाना।
ऐसा मंगल कार्य करें और स्वयं वीर बन जाना।

रचनाएँ - विराग शास्त्री, जबलपुर

मोबाईल के कारण बेटी ने लिये अपने पिता के प्राण

मोबाइल दुरुपयोग निरन्तर घातक बनता जा रहा है। पहले तो हमें मात्र आंख खराब होना, माईग्रेन, डिप्रेशन जैसे बीमारियों की चिन्ता होती थी पर अब यह मोबाइल हत्या जैसे जघन्य अपराधों का कारण बनता जा रहा है।

देश के विख्यात शहर बैंगलोर में पिछले महीने घटित दो घटनाओं ने फिर सोचने पर मजबूर कर दिया है कि जीवन के लिये मोबाइल की मर्यादायें करना कितना आवश्यक हो गया है।

पहली घटना में बेंगलौर के राजाजी नगर में रहने वाले जय कुमार गोधा अपनी नवमी कक्षा में पढ़ने वाली 15 वर्षीय बेटी की मोबाइल की दीवानगी से परेशान रहते थे । वे कई बार प्रेम से अपनी बेटी से मोबाइल का प्रयोग कम कर पढ़ाई पर ध्यान देने की सलाह देते थे। इस कारण वे कई बार उसे वे डांट भी देते थे। इससे उनकी बेटी मन ही मन उनसे नाराज रहने लगी थी और अपने पिता को अपना विरोधी समझने लगी। उसने अपने पिता को मारने के लिये एक योजना बनाई, पर परिवार के अन्य सदस्यों के घर में रहने के कारण वह सफल नहीं हो पा रही थी। 17 अगस्त को जयकुमार जी धर्मपत्नी और उनका बेटा पारिवारिक कार्य से पुडुचेरी गये और बेटी को मौका मिल गया। उसने अपने पिता को किसी पेय पदार्थ में नींद की दवा मिलाकर पिला दी, जिससे जयकुमारजी बेहोश हो गये। बाद में उसने अपने 19 वर्षीय दोस्त प्रवीण कुमार को बुलाकर चाकू मारकर उनकी हत्या कर दी। हत्या के सबूत मिटाने के लिये उन दोनों ने जयकुमारजी के कपड़ों को वाशिंग मशीन में धोया और जमीन पर गिरे खून के दाग साफ किये। बाद में शव को बाथरूम में ले जाकर पेट्रोल डालकर आग लगा दी और मदद के लिये शोर मचाने लगी। जब लोग आये तो उन्हें बताया कि पापा बाथरूम में नहाने गये थे और अचानक वहाँ आग लग गई। पुलिस को शंका हुई तो उन्होंने दोनों को थाने ले जाकर पूछताछ की तो उन्होंने हत्या का अपराध स्वीकार कर लिया। प्रवीण को जेल भेज दिया गया और लड़की को नाबालिग होने के कारण सुधार गृह भेज दिया गया।

जैसे ही इस घटना लोगों तक पहुँची तो पूरा बैंगलोर और देश आश्चर्यचकित रह गया। जय कुमारजी देव-शास्त्र-गुरू के उपासक और अत्यंत हंसमुख सरल स्वभावी थे और प्रवीण भी अपने सम्पन्न माता-पिता की इकलौती संतान है। एक मोबाइल की दीवानगी ने दो परिवारों का पूरा जीवन अंधकारमय कर दिया।

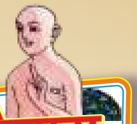

मायाचार का दुष्परिणाम

दुर्ग पर्वत पर चारण ऋद्धिधारी गुणनिधि नाम के मुनिराज चार माह के उपवास का नियम लेकर तपस्या में लीन थे। इनकी चार माह की तपस्या से गांव वाले बहुत प्रभावित थे। चातुर्मास के बाद गुणनिधि मुनिराज ने वहाँ से विहार किया।

उसी पर्वत के पास आलोक नगर में एक मृदुमति नाम के दूसरे मुनिराज आहार के लिये आये। लोगों ने इन मुनिराज को गुणनिधि मुनिराज समझकर उनकी बहुत भक्ति - पूजा की और विशेष सन्मानपूर्वक आहार दिया।

मुनि मृदुमति को यह आभास हो गया कि लोग मुझे गुणनिधि मुनि समझ रहे हैं और मुझे इतना सन्मान दे रहे हैं। परन्तु मान के लोभ से मृदुमति मुनिराज ने लोगों से यह नहीं कि कहा कि मैं गुणनिधि नहीं हूँ और बाद में गुरू के पास जाकर कोई प्रायश्चित भी नही लिया। पूर्व में आयु बंध जाने के कारण वे मरण के बाद स्वर्ग में देव बन गये और स्वर्ग की आयु पूरी करके मायाचारी के परिणाम से शल्लकी वन में हाथी बन गये। इस हाथी को रावण ने पकड़ लिया और अपनी सेना में रख लिया और उसका नाम त्रिलोकमण्डन नाम रखा।

जब रावण को जीतकर राम वापस अयोध्या जाने लगे तो राम उस हाथी को अपने साथ अयोध्या ले आये। एक दिन उस हाथी ने राम के छोटे भाई भरत को देखा और उसे पूर्व भव की याद आ गई और उस हाथी को वैराग्य हो गया।

ऊँचा पद लेकर थोड़ी सी भूल कितनी दुःखदायक होती है क्योंकि जितने अधिक ऊंचे स्थान से मनुष्य गिरता है उतनी ही ज्यादा चोट लगती है। सफेद कपड़े पर दाग जल्दी लगता है और सभी को दाग जल्दी दिखता है।

क्या पटाखे फोड़कर

आप मानव हैं या दानव ? - स्वयं निर्णय करें

आप अहिंसा व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?

अतः जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले
भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर
हिंसा का तांडव मत करिये । राम, बुद्ध, नानक एवं संतों-महापुरुषों के
अहिंसा संदेश का पालन कीजिये । सुख शांति के पर्व
दीपावली पर अन्य जीवों के लिये यमराज न बनें ।

- : प्रकाशक :-

चहकती चेतना धार्मिक त्रैमासिक बाल पत्रिका

सर्वोदय 702, जैन बंधु, फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर - 482 002 (म.प्र.)

मो. : 09300642434 ई-मेल - kahansandesh@gmail.com

सदस्यता राशि : 500/- तीन वर्ष हेतु 1500/- दस वर्ष हेतु

संपादक - विराग शास्त्री

यह हिंसा के यमराज का नहीं, अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है ।

पाव–ब्रेड

कितना अभक्ष्य है ? वो जानिये

पहली हिंसा...

1. पाव मैंदा से बनता है । मैदा गेहूँ में से बनता है । फ्लोरमील में स्टोरेज किये हुये 2-4 महीने पुरानी गेहूँ की बोरियों को खोलने से पता चलेगा कि उसमें अनगिनत धान्यकीट होते हैं । ऐसे गेहूँ को गरम पानी में भिगोने या चक्की में पीसने से धान्यकीट मर जाते हैं यह पहली हिंसा ।

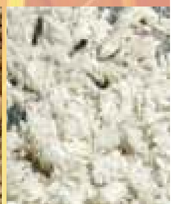

दूसरी हिंसा...

2. भीगे गेहूँ को सुखाकर, पीसकर, मैदा बोरियों में पैक होता है । कई दिनों तक पड़े रहने से मैदा खाने लायक नहीं रहता । अनेक जीव उत्पन्न होते हैं । ऐसा मैदा बेकरीवाले लेते हैं । उसमें खट्टा पदार्थ मिलाने पर अनेक जीव मर जाते हैं । यह दूसरी हिंसा ।

तीसरी हिंसा...

3. आटे डालने में उसमें फफूंद भी होती है और त्रस जीव उत्पन्न होते हैं । उसको ओवन में पकाने से वह सब जीव मरते हैं । यह तीसरी हिंसा ।

चौथी हिंसा...

4. थोड़ा गीला पाव ओवन से बाहर निकाल लेते हैं । रात रहने से वह बासी होता है, जिसमें फिर से त्रस जीवों (बेक्टेरीया) की उत्पत्ति होती है, ऐसे पाव खाने से चौथी हिंसा ।

पांचवीं हिंसा...

5. ऐसे जीव जंतु वाले पाव खाने से बीमारी का कारण बनते हैं और एलोपेथिक दवाईयों द्वारा पेट में रहने वाले जीव मर जाते हैं यह पांचवी हिंसा ।

ऐसी हिंसा की परंपरा से बना हुआ पाव-ब्रेड के आगे जैन शब्द लगाकर जैन सेन्टवीच, जैन दाबेली, जैन बड़ापाव और जैन पावभाजी आदि बिकता है । जो बिल्कुल खाने लायक नहीं है ऐसे पाव-ब्रेड का जीवनभर त्याग करके आत्मा को पाप से और शरीर को रोग से बचाइये ।

पाव-ब्रेड की इस सूचना को अपने मित्रों और परिवार को व्हाट्सएप द्वारा सूचित करें ।

मोबाईल की आदत के कारण 10% बच्चों की टेढ़ी हो गई आँखे 18% बच्चों की कमजोर हो गई दृष्टि

मोबाईल का दुरुपयोग अर्थात् मात्र बर्बादी

बच्चों के लिये मोबाइल की आदत ड्रग्स से भी अधिक खतरनाक हो गई है। इससे पढ़ाई में एकाग्रता तो कम हो ही रही है साथ ही बच्चों की आँखें भी कमजोर हो रहीं हैं। गुजरात में हुये एक सर्वे के अनुसार मोबाइल की स्क्रीन को लगातार देखने के कारण राज्य के 30 प्रतिशत लोगों की आंखें सूख (**Dry Eyes**) गईं हैं। 10 प्रतिशत बच्चों की आंखों में टेढ़ापन आ गया है। अहमदाबाद के सिविल अस्पताल की सीनियर आई स्पेशलिस्ट डॉ. हंसा ने बताया कि 8 साल तक के बच्चों की आँखें विकसित हो रही होतीं हैं इसलिये इस उम्र ध्यान न दिया जाये तो टेढ़ापन आने की अधिक संभावना होती है। अहमदाबाद की वरिष्ठ आई चिकित्सक डॉ. कामिनी ने बताया कि हमारे पास आने वाले आंख के मरीजों में से 85 प्रतिशत मरीजों की बीमारी का कारण दिन में 5 घंटे से अधिक मोबाइल, आई पेड, टेब या टीवी के का उपयोग करना है और इन मरीजों में अधिकांश मरीज 6 से 20 साल के हैं। इन बच्चों को भविष्य में आर्मी या पुलिस की नौकरी मिलना मुश्किल है क्योंकि इन नौकरियों की शर्त में आंखों की दृष्टि अच्छी होना शामिल है।

माता-पिता के व्यस्तता से मोबाइल की लत लगी - अहमदाबाद के 8 साल का विक्रम के माता-पिता दोनों नौकरी करते हैं इसलिये वह अधिकांश समय दादाजी के पास रहता है। हर दिन स्कूल से आने के बाद दोपहर में 4 घंटे तक लगातार मोबाइल पर कॉर्टून देखने से उसे उसकी लत लग गई। इसके कारण उसकी आंखों का एलाइनमेन्ट बिगड़ गया।

बर्थडे फोटो से पता चला टेढ़ी हो गईं आंखें - अहमदाबाद के जुहापुरा की 6 साल की समीरा शेख अपने पिता के टेब पर गेम खेलती थी और स्कूल का कार्य भी करती थी। पिताजी नौकरी में रात की शिफ्ट होने के कारण दिन में आराम करते थे। समीरा को स्कूल में नोटबुक में लिखते समय आंखों में तकलीफ महसूस होने लगी। बर्थ डे की एक फोटो में उसकी आंख टेढ़ी आईं तो डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने दवाईयाँ दीं और कहा यदि 6 माह में आंख ठीक नहीं हुईं तो इसका ऑपरेशन करना पड़ेगा।

दो-दो मम्मी दिखने लगीं - बोटाद नगर की 5 साल की टीना को उसकी माँ ने घर के बाहर खेलने से मना किया तो वह घर में ही मोबाइल पर गेम खेलने लगी। हर दिन दो घंटे लगातार मोबाइल खेलने से उसे अचानक दो मम्मी दिखने लगीं और उसकी आंखें भी टेढ़ी हो गईं। डॉक्टर के पास जाने पर उसे चश्मा लग गया और यह चश्मा उसे जीवन भर पहनना पड़ेगा।

आदत कैसे लग जाती है -

- माता - पिता काम में व्यस्त हो जाते हैं और उन्हें बच्चे डिस्टर्ब न करें इससे बचने के लिये वे बच्चों को मोबाइल देकर निश्िंचत हो जाते हैं।
- दो माह के बच्चे को मोबाइल पर कॉर्टून दिखाना शुरु कर देते हैं।
- बच्चों की जिद के आगे हार जाते हैं।
- बच्चे भोजन ठीक से करें इसलिये उनके सामने मोबाइल रखते हैं।
- बच्चे घर के सारे बड़े सदस्यों को अपने मोबाइल पर व्यस्त देखते हैं।

क्या करें -

- बच्चों के सामने मोबाइल का प्रयोग मात्र बात करने के लिये करें, गेम खेलने या वीडियो देखने के लिये नहीं।
- बच्चों के साथ थोड़ा समय बितायें। उन्हें नीति की शिक्षा दें। जीवन की अच्छी - बुरी बातों के बारे में बतायें।
- बच्चों को अन्य खेल खेलने के लिये कहें।
- बच्चों जिद के आगे झुकें नहीं, बल्कि उनका मन कहीं और लगाने का प्रयास करें।
- बच्चे हमारे हैं, उनकी किसी भी समस्या के जिम्मेदारी हमारी है और परेशानी भी हमारी ही बढ़ेगी। विचार करें।

मोबाईल गेम पबजी ने फिर एक और प्राण लिये

दूसरी घटना में बैंगलोर के काकती गांव का 25 वर्षीय रघुवीर नाम का युवक हमेशा मोबाइल के पबजी गेम में व्यस्त रहता था। उसके पिता शंकरप्पा कंबार कर्नाटक पुलिस से रिटायर हुये थे और हमेशा अपने पुत्र को मोबाइल का उपयोग करने और कुछ काम करने की सलाह देते थे। इस बात पर पिता-पुत्र का कई बार झगड़ा भी हो जाता था। पड़ोसियों के द्वारा रिपोर्ट करने पर एक बार पुलिस ने भी आकर उसे समझाया था। परन्तु झगड़ा चलता रहा। 8 सितम्बर की रात जब रघुवीर पबजी गेम खेल रहा था तो पिता ने उसका मोबाइल छीन लिया। इस बात पर रघुवीर को गुस्सा आ गया और उसने अपने पिता की तलवार से गला काटकर हत्या कर दी और पिता के शव के कई टुकड़े कर दिये। पुलिस ने रघुवीर को गिरपतार कर जेल भेज दिया।

बात यह विचारणीय है कि क्या अपने बच्चों को पिता के उनके ही भविष्य के लिये टोका जाना अपराध है ?

शराबी कौन

एक शराबी शराब पीकर नशे में सड़क के किनारे पड़ा हुआ था। उसे सारी धरती घूमते हुये दिखाई पड़ रही थी। उसी समय देश का राजा अपने हाथी पर बैठा हुआ वहाँ से जा रहा था। राजा को देखकर शराबी बोला - क्यों रे रजुआ के लड़के ! अपने गधे को बेचेगा क्या ? राजा ने उसे नशे में जानकर उससे बोलना उचित नहीं समझा और उससे बात किये बिना वहाँ से चला गया।

दूसरे दिन राजा ने अपने सिपाहियों को भेजकर उस शराबी को अपनी राजसभा में बुलवाया और उससे पूछा - क्यों भाई! कल तुम हमारे हाथी को गधा कह रहे थे, खरीदना है क्या ?

यह देखकर शराबी घबरा गया। वह बोला - महाराज! मैं गरीब भिखारी हूँ। मुझे तो पेट भरकर भोजन भी नहीं मिलता, मैं क्या आपका हाथी खरीदूँगा ?

कल तो तुम कह रहे थे क्यों वे रजुआ ! गधा बेचेगा क्या ? - राजा कड़क आवाज में बोला - महाराज! वह गधा खरीदने वाला तो गया। वह तो शराब का नशा था। शराब गई तो नशा भी गया। - शराबी ने हाथ जोड़कर कहा।

राजा ने कहा- जब तुझे पेट भरकर भोजन भी नहीं मिलता तो शराब क्यों पीता है ?

यह सुनकर शराबी चुप हो गया। तभी एक विद्वान मंत्री बोला - महाराज! इसका अपराध क्षमा किया जाये। आज सारा विश्व ही नशे में बेहोश है। कोई पद के नशे में, कोई सुन्दरता के नशे में तो कोई त्याग और विराग के नशे में है। महाराज! जब तक आत्मज्ञान नहीं होगा तब तक यह मोह का नशा नहीं उतर सकता । **हमें और आपको राजसत्ता का नशा चढ़ा है, विद्वान लोकप्रियता के नशे में है, सेठ यश के नशे में है, जिससे हम सभी दूसरे को तुच्छ और हीन मानते हैं और अपने को विशेष। जैसे यह शराबी भूखा रहकर भोजन में धन खर्च नहीं करके शराब में धन बरबाद करता है वैसे ही हम अनादिकाल से नरक आदि के भयंकर दुःख भोगते हुये अपने ज्ञान रूपी धन को आत्मकल्याण में न लगाकर पद-प्रतिष्ठा पाने में बरबाद करते हैं।**

यह सुनकर राजा और पूरी सभा विचार करने लगी कि सभा के बीच में खड़ा व्यक्ति ही नशा नहीं करता बल्कि भी हम में नशे में हैं तो फिर अपराधी कौन ?

एक आत्मसाधिका का इस तरह चले जाना...

जिनमंदिर में जिनेन्द्र देव को नमस्कार करते समय देह छोड़ी

**यूं तो लोग हर दिन ही मरा करते हैं
पर उनकी मौत भी हमें जिन्दा कर गई।**

ये शेर कभी-कभी जीवन की हकीकत बन जाता है। जबलपुर के वीतराग विज्ञान मण्डल की सदस्या श्रीमति शकुन जैन ने दशलक्षण महापर्व के अंतिम दिन अनंत चतुर्दशी को उपवास के साथ अगले दिन सुबह भोजन तक मौन का संकल्प लिया और क्षमावाणी के पावन दिवस पर दूसरे दिन प्रातः उन्हें घर पर ही पसीना आया तो उनके सुयोग्य बेटे आशीष ने उन्हें डॉक्टर के पास चलने का आग्रह किया परन्तु जिनधर्म की भक्ति में लीन आराधिका पहले जिनेन्द्र देव के पास जाना चाहती थी और जिनेन्द्र पूजन और स्वाध्याय के बाद पारणा और उसके बाद कहीं और। प्रातःकाल से आराधना प्रारम्भ की और नित्य नियम पूजन के पश्चात् रत्नत्रय पूजन कर रहीं थीं। सम्यग्ज्ञान की पूजा के अर्घ्य में जैसे ही नमों सदा शब्द आया तो उन्होंने पूरे मनोयोग से तीन लोक के नाथ को नमस्कार किया मानों वे त्रिलोकीनाथ के सामने भावना कर रहीं हो कि हे प्रभो ! जैसे आपने ज्ञान की पूर्णता कर अनंत सुख को प्राप्त किया वैसे ही मुझे भी सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो और आश्चर्य हुआ कि उनका शरीर नमस्कार की मुद्रा में स्थिर हो गया। कुछ पल उनके साथ महिलाओं को भी समझ नहीं आया, कुछ पल बाद जैसे ही कुछ अनहोनी की आशंका हुई तो पूजन करने वाले साधर्मी उन्हें लेकर तेजी हॉस्पिटल की ओर भागे, इस उम्मीद में हमारी आशाओं की तरह शकुनजी भी जीवित हों। हॉस्पिटल पहुँचने के कुछ देर बाद ही सभी की उम्मीदों का सूर्य अस्त हो गया और एक आराधक जीव हमारे बीच से विदा हो गया। जिनेन्द्र पूजन की वे पक्तियाँ शकुनजी के जीवन का शुभ शकुन बन गईं।

इस एक प्रसंग मात्र से उनकी यशगाथा नहीं बन सकती उनका पूरा जीवन ही आदर्श और साहस की पाठशाला है। अल्प वय में ही पति का वियोग, चार छोटे बच्चों की जिम्मेदारी, आशायें साकार हों इससे पूर्व ही 22 वर्ष के युवा पुत्र के दुर्घटना में स्वर्गवास की असहनीय पीड़ा जैसी न जाने कितनी प्रतिकूलताओं को अपने अदम्य साहस और सहजता से सामना किया इस माँ ने। पहाड़ जैसी प्रतिकूलतायें भी एक जिनभक्त को अपने कर्तव्य से नहीं डिगा पाईं। उनको देखकर लगता कि जैसे सती सीता, सती अंजना का रूप हो। विपदाओं में शांत बने रहना, कम बात करना, देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा, अपनी चारों संतानों को जिनधर्म के दृढ़ संस्कारों से पल्लवित करना, सुविधाओं को गौण कर यथासंभव जिनधर्म के शिविरों में लाभ लेने बाहर जाना, प्रतिदिन पूज्य गुरूदेवश्री की वाणी से आराधना प्रारम्भ करना, प्रतिदिन

तीन समय स्वाध्याय, न जाने कितने सारे गुणों की खान थीं वात्सल्यमयी माँ श्रीमति शकुनजी। वे हमेशा भावना करतीं थीं कि मेरा मरण देव-शास्त्र-गुरू की आराधना करते हुये ही हो किसी हॉस्पिटल में भगवन्तो के विरह में नहीं। मानों प्रकृति ने इस उत्तम श्राविका की भावना को पूरा करने का वचन दे दिया और भगवन्तों के सामने ही उनके देह छोड़ने की तैयारी हो गई।

हम सब उनके इस अकस्मात् से शोकाकुल हैं परन्तु आदरणीया शकुनजी ने भव के अंत की तैयारी पूरी कर ली और हमें दें गईं हर पल सजग, सतर्क और सावधान रहने का संदेश। ऐसे मंगलमय आराधक जीव को शत-शत नमन।

- विराग शास्त्री

कथा सुनो पुराण की

स्वप्न

एक दिन महाराजा जनक ने स्वप्न में देखा कि किसी राजा ने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया है और उनका राज्य छीनकर उन्हें देश से बाहर निकाल दिया है। जनक घोर जंगलों में पथरीली जमीन पर चल रहे हैं और भूख-प्यास से व्याकुल हो रहे हैं। तीन दिन बाद वे एक गांव में पहुँचे।

उस गांव में एक सेठ की ओर से गरीबों को खिचड़ी बांटी जा रही है और जनक वहाँ जाकर लम्बी लाइन में लग गये और बहुत दीनता से खिचड़ी मांग रहे हैं। जब जनक का नम्बर आया तो तब तक खिचड़ी समाप्त हो गई। जनकर ने कहा - भाई ! मुझे बहुत जोर से भूख लगी है यदि भोजन नहीं मिला तो मैं मर जाऊँगा। जनक की दयनीय हालत देखकर सेठ ने चम्मच से बर्तन में चिपकी हुई जली - हुई खिचड़ी खुरचकर जनक को दे दी। जैसे ही जनक ने खिचड़ी हाथ में ली, इतने में एक चील (**Eagle**) झपट्टा मारकर खिचड़ी छुड़ाकर ले गई और जनक देखते रह गये। इतने में घबराकर जनक की नींद खुल गई। वे सोचने लगे कि ऐसा स्वप्न मुझे क्यों आया ? इस स्वप्न को देखने के बाद उनका किसी काम में मन नहीं लग रहा था।

राजसभा में उन्होंने सुमति मंत्री से स्वप्न बताकर पूछा - कि ये राजसभा, सिंहासन, राजमहल-वैभव सत्य है या रात का स्वप्न सत्य है ? मंत्री बोला - राजन् ! ने ये सत्य है न वह सत्य है। वह रात्रि का स्वप्न था और यह दिन का स्वप्न है।

मध्य एशिया में जैन धर्म

मध्य एशिया और दक्षिण एशिया में लेनिन ग्राड पुरातत्व संस्थान के प्रोफेसर यूरि जेडनेयाहस्की ने एक पत्रकार सम्मेलन में कहा था कि भारत और मध्य एशिया के बीच लगभग 1 लाख वर्ष पुराना सम्बन्ध है। उस समय जैन धर्म मध्य एशिया में फैला हुआ था। इतिहास के प्रसिद्ध जानकार श्री जे.ए. दुबे ने लिखा है कि आक्सियाना, कैस्मिया, बल्ख और समरकंद नगर जैन धर्म के केन्द्र थे। प्रोफेसर एन. रामस्वामी आयंगर के अनुसार ग्रीस, रोम, नार्वे में जैन मुनिराज विहार करते थे। नार्वे के म्यूजियम में भगवान आदिनाथ की प्रतिमायें हैं। वे नग्न और खड्गासन हैं। तर्जिकिस्तान में जमीन खुदाई में हजारों वर्ष पुरानी सिक्के और सील मुहर मिलीं हैं, इन पर नग्न मुद्रायें बनीं हैं। हंगरी के बुडापेस्ट नगर में भगवान आदिनाथ और भगवान महावीर की प्रतिमायें खुदाई में प्राप्त हुईं हैं।

ईसा मसीह के पूर्व ईराक, ईरान और फिलिस्तीन में हजारों जैन मुनि विहार करते थे। पश्चिम एशिया, मिर, यूनान और इथियोपिया में के पहाड़ों और जंगलों में अनगिनत जैन मुनि ज्ञान-ध्यान में लीन रहते थे। प्रसिद्ध लेखक वानक्रेपर के अनुसार मध्य-पूर्व के **सामानिया** सम्प्रदाय **श्रमण** शब्द का ही रूप है। प्रसिद्ध इतिहास लेखक मेजर जनरल जे.जी.आर फर्लांग ने लिखा है कि ईसा से 330 वर्ष पहले प्राचीन यहूदी वास्तव में इक्ष्वाकु वंशी जैन थे जो **जुदिया** रहने के कारण **यहूदी** कहलाने लगे थे। इस प्रकार यहूदी धर्म का स्रोत भी जैन धर्म लगता है। इस्तांबुल नगर से 570 कोस की दूरी पर तारा तम्बोल नगर में बड़े-बड़े विशाल जैन मंदिर विराजमान थे। विद्वान जी.एफ.कार ने लिखा है- ईसा के जन्म से 100 वर्ष मध्य एशिया ईराक, डबरान और फिलिस्तीन में हजारों जैन मुनि जैन धर्म का प्रचार करते थे। मिस्र का दक्षिण भाग राक्षस्तान कहा जाता है। राक्षस शब्द जैन धर्म में विद्याधर देव आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। उस समय यह भू भाग सूडानप, एबीसिनिया और इथियोपिया कहलाता था। यह सारा क्षेत्र जैनधर्म का क्षेत्र था।

मिस्र एजिप्ट की प्राचीन राजधानी पैविक्स एवं मिस्र की विशिष्ट पहाड़ के बारे में लेखराम ने लिखा कि यहाँ की गुफाओं की प्रतिमायें गिरनार तीर्थ की मूर्तियों से मिलती हैं। भारत के अनेक जैन लोग मिस्र आदि देशों मे जाकर बस गये। मिस्र के बोलान शहर में अनेक जैन मंदिरों निर्माण हुआ। घोलक राज्य के राजा वीर धवल महामंत्री वस्तुपाल के साथ अनेक लोगों ने विक्रम संवत् 1275 से 1303 तक जैन धर्म के

व्यापक प्रचार में अपना योगदान दिया। इन लोगों ने भारत के बाहर सिंध, मुलतान, गांधार, पेशावर आदि नगरों में जैन मंदिरों का निर्माण करवाया। प्राचीन समय में शिक्षा के प्रमुख केन्द्र तक्षशिला में अनेक जैन मंदिर और स्तूप विद्यमान थे। अरबिया में इस्लाम के फैलने के बाद भगवान आदिनाथ, भगवान नेमिनाथ, भगवान बाहुबली के मंदिर और अनेक मूर्तियाँ नष्ट हो गईं। अरबिया की राजधानी पोदनपुर जैन धर्म का गढ़ था और यहाँ भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा विराजमान थी। भगवान ऋषभदेव को अरबिया में **बाबा आदम** कहा जाता है। मौर्य सम्राट सम्प्रति में यहाँ और फारस में जैनधर्म का बहुत प्रचार हुआ। इस्लाम की साम्राज्य होने के बाद जैन मंदिरों को मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया। इस समय वहाँ जो प्राचीन मस्जिदें हैं उनकी निर्माण शैली जैन मंदिरों के अनुसार हैं। इस बात की पुष्टि जैम्स फर्ग्यूसन ने अपनी पुस्तक विश्व की दृष्टि के पेज नं. 26 पर की है। बीच में जैन विद्वानों ने बगदाद और मध्य एशिया जाकर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया था।

यूनानी देश के पाइथागोरस, पायरो, प्लॉटिन आदि दार्शनिक विद्वान श्रमण दर्शन के मुख्य प्रतिपादक थे। एथेन्स में दिगम्बर जैन संत श्रमणाचार्य की प्रतिमा है। आस्ट्रिया और हंगरी के बुडापेस्ट में भूकंप के कारण एक बगीचे की जमीन से भगवान महावीर की प्रतिमा बाहर आ गई।

सीरिया में भी दिगम्बर मुनिराज विहार करते थे। ईसा मसीह ने भी भारत में आकर सिद्धक्षेत्र पालीताना में रहकर जैन तथा भारतीय दर्शनों का अध्ययन किया था। स्केडिनेविया में जैन धर्म के बारे में कर्नल टाड ने लिखा कि स्केडिनेविया में भगवान नेमिनाथ **औडन** नाम के देवता थे और चीनियों के **फे** नाम के देवता थे।

इन सभी प्रमाणों से मालूम चलता था कि प्राचीन समय में जैन धर्म समृद्ध होने के साथ-साथ विस्तृत था। यह सब जानकर हमें गौरव के साथ अपने महान जैन धर्म का श्रद्धान दृढ़ होना चाहिये।

सत्पथ सुविचार

- शराब, शहद, मांस, सिगरेट, रात्रिभोजन और अभक्ष्य भक्षण करने वाले व्यक्ति को जैन समाज या जैन समाज की किसी भी संस्था में किसी भी पद पर रहने का कोई अधिकार नहीं है। यदि समाज का नेता ही आचरण विहीन होगा तो उससे जिनधर्म प्रभावना की उम्मीद करना बड़ी भूल होगी।
- अब समाज को साम्राज्य विस्तार की स्थान पर संस्कृति विस्तार की ओर कदम बढ़ाना चाहिये।

आपके प्रश्न आगम के उत्तर

प्रश्न -1. स्कूल में की पुस्तकों में बताया गया है कि पृथ्वी घूमती है और जैन शास्त्रों में बताया है कि पृथ्वी स्थिर है। इनमें से किसे सच्चा मानें ?

उत्तर - इस सम्बन्ध में वैज्ञानिकों में ही आपस में ही मतभेद हैं। कुछ वैज्ञानिक पृथ्वी को स्थिर ही मानते हैं। जैन शास्त्रों में सर्वज्ञ के ज्ञान के अनुसार पृथ्वी को स्थिर और सूर्य-चन्द्रमा को गतिमान बताया गया है।

प्रश्न 2. जैनधर्म के अनुसार क्या पृथ्वी गोल नहीं है ?

उत्तर - जैन धर्म के अनुसार पृथ्वी गोल तो है परन्तु संतरे के आकार की नहीं बल्कि थाली के आकार की गोल है।

प्रश्न 3. कच्चा पपीता अभक्ष्य है या भक्ष्य ?

उत्तर - कच्चा पपीता क्षीरफल होने के कारण अभक्ष्य है। क्षीर फल अर्थ जिन फलों से दूध निकलता है। पका पपीता क्षीर फल नहीं रह जाता इसलिये वह भक्ष्य अर्थात् खाने योग्य है।

प्रश्न 4. क्या किसी के मकान पर मंदिर की छाया पड़ना अशुभ है ?

उत्तर - यह कोई शास्त्रीय विधान नहीं है। मन से बनाई हुई कल्पना है और झूठे पण्डितों का धन कमाने का व्यापार है।

प्रश्न 5. क्या दीपावली में रात्रि पूजन कर सकते हैं ?

उत्तर - दीपावली में ही नहीं बल्कि कभी भी रात्रि में पूजन करने में पाप है। रात्रि भोजन त्याग जैसा ही नियम पूजन के साथ लागू होता है।

प्रश्न 6. क्या प्रेम करना धर्म है ?

उत्तर - नहीं, प्रेम करना धर्म नहीं बल्कि राग का परिणाम होने से भावकर्म है।

प्रश्न 7. जिसके पास अधिक धन वैभव हो तो क्या वह परिग्रही है ?

उत्तर - नहीं। जिसे धन और वैभव के प्रति ममता है वह परिग्रही है। गरीब भी परिग्रही हो सकता है और धनवान भी अपरिग्रही।

प्रश्न 8. मेरा मन बहुत चंचल है। इसे एकाग्र करने का क्या उपाय है ?

उत्तर - शास्त्राभ्यास करना और जो बातें है जिनवाणी में आईं हैं उनका विचार करना ही मन एकाग्र करने का उपाय है। **- (सन्मति संदेश पत्रिका - 1979)**

समाचार

बंगलौर में दशलक्षण पर्व सानन्द सम्पन्न

देश के प्रसिद्ध आई.टी. नगर बंगलौर में श्री आदिनाथ दिगम्बर जिन मंदिर, वलेपेठ में आराधना के शाश्वत दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न हुये। इस कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित श्री विराग शास्त्री जबलपुर का लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रातः श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल और पूजन के बाद दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। पूजन के बाद पूज्य गुरुदेवश्री का मांगलिक सीडी व्याख्यान और इसके पश्चात् समयसार ग्रन्थराज पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। रात्रि में प्रतिक्रमण के बाद जिनागम के विभिन्न विषयों पर स्वाध्याय हुआ। विधान में स्थानीय विद्वान पण्डित किशोरजी शास्त्री और मंगलार्थी श्री संदीप जैन का लाभ प्राप्त हुआ।

अवकाश के दिनों में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुये। जिनमंदिर के प्रमुख श्री चम्पालालजी भभूतमलजी भण्डारी ने आभार व्यक्त किया।

दशलक्षण महापर्व पर पंडित सौरभ शास्त्री इंदौर द्वारा आस्ट्रेलिया में जिनधर्म प्रभावना

दशलक्षण महापर्व पर युवा विद्वान पण्डित सौरभ शास्त्री इंदौर द्वारा आस्ट्रेलिया के सिडनी और मेलबोर्न शहरों में जिनधर्म प्रभावना का अभूतपूर्व कार्य किया सम्पन्न हुआ। आस्ट्रेलिया में निवास कर रहे जैन धर्मावलम्बियों के आमंत्रण पर श्री सौरभ शास्त्री दिनांक 30 अक्टूबर से 17 सितम्बर तक आस्ट्रेलिया प्रवास पर रहे। यहाँ के साधर्मियों को सौरभ जी की कक्षाओं और प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय है। इस जिनालय से 70 से अधिक जैन परिवार जुड़े हैं।

ज्ञातव्य है कि श्री सौरभजी ने पण्डित टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में रहकर शास्त्री की उपाधि प्राप्त करने के बाद विगत लगभग 20 वर्षों से जिनधर्म के प्रचार-प्रसार में अत्यंत सक्रियता से संलग्न हैं। इस कार्य में उनके भ्राता श्री गौरव शास्त्री भी कक्षाओं और प्रवचनों के साथ-साथ डिजिटल मीडिया की आधुनिक पद्धति से जिनशासन के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं। इंदौर यंग जैन प्रोफेशल्स संस्था के माध्यम से युवाओं को जिनागम का अभ्यास करा रहे हैं।

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटसएप / करें। **500/-रु. तीन वर्ष हेतु 1500/-दस वर्ष हेतु । आप 11000/- द्वारा चहकती चेतना के स्थायी स्तंभ बनकर आजीवन सदस्य बनें और पाईये संस्था द्वारा समस्त वीडियो सीडी, साहित्य और अन्य सामग्री।**

प्रसंग जो सिखाते हैं -

बेटे की कीमत

मेरे बेटे के लिये मेरे पास 30-30 लाख के सम्बन्ध आये, लेकिन मैंने वहाँ सम्बन्ध नहीं किया। वो तो आपकी गरीब परिस्थिति और आपकी बेटी गुणवान देखकर आपके घर बेटे का सम्बन्ध तय कर रहा हूँ। आप 15 लाख ही दे देना। लड़के के पिता की ऐसी बात सुनकर लड़की के पिता को क्रोध आ गया परन्तु उन्होंने धैर्य रखते हुये पूछा - वैसे आपके पुत्र का वजन कितना होगा ? लड़के के पिता ने आश्चर्य के साथ कहा- लगभग 60 किलो होगा। तब तो आपके बेटे का मांस 40 हजार रु. किलो होगा। मैं अहिंसावादी जैन धर्म का अनुयायी हूँ और आपके इस मांस के बेटे को नहीं खरीद सकता।

पुरानी सीडी निस्तारण की सुविधा प्रारंभ

यदि आपके पास पुरानी सीडी रखीं हैं और उनका कोई उपयोग नहीं हो रहा है तो आपकी समस्या के निवारण के लिये **श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई** के संयोजन सीडी निस्तारण की व्यवस्था प्रारम्भ की गई है। इन सीडी का एक विशेष प्लांट में पाउडर बनाया जायेगा जिससे अन्य उपयोगी सामग्री का निर्माण होगा। हमने इस प्लांट में जाकर स्वयं निरीक्षण किया है और कम्पनी ने हमारे अनुरोध पर पुरानी सीडी लेने की सहमति दे दी है। परन्तु इन सीडी को एक प्रक्रिया के तहत ही स्वीकार किया जायेगा। आप इस कार्य के लिये विराग शास्त्री, जबलपुर से 7000104951 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

- संपादक

सहयोग प्राप्त

5100/- रतलाम निवासी श्रीमान् आनन्दकुमारजी अजमेरा के स्वर्गवास के प्रसंग पर उनके पुत्र श्री राजकुमारजी अजमेरा परिवार द्वारा प्राप्त ।

5101/- श्री दर्पण जैन, कोटा की ओर चहकती चेतना के लिये प्राप्त।

2100/- अहमदाबाद निवासी श्री प्रतीक भाई शाह के सुपुत्र समकित के सगाई के प्रसंग प्रर प्राप्त।

1100/- श्रीमती हंसा विजय जी पामेचा, जबलपुर द्वारा चहकती चेतना में प्राप्त ।

सभी दातारों के प्रति आभार।

सत्पथ सुविचार

- यदि आप जैन धर्म के किसी भी पंथ से लगाव रखते हैं और आप रात्रि भोजन करते हैं तो आपका जैन धर्म के प्रति प्रेम ढोंग है और स्वयं के साथ छल।
- निःसन्देह रात्रिभोजन पाप है और सामूहिक रात्रि भोजन महापाप।
- यदि आप अच्छे काम की अनुमोदना नहीं करते हैं तो बुरे काम को बढ़ावा दे रहे हैं।

जन्मदिवस की शुभकामनायें

जन्म मरण की अभाव की भावना में ही
जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

नीरज जिनवर वचन से, जलें ज्ञान के दीप ।
हो प्रशांत निज आत्मा,हों मुक्ति के गीत ।।

नीरज प्रशान्त जैन, बैंगलोर 10 अक्टूबर

उत्तम भव जिनधरम मिला, है सौभाग्य विवान ।
श्रद्धा से जिनपद मिले, पाओ मुक्ति धाम ।।

विवान अंशु-श्रद्धा मोदी, नागपुर 3 सितम्बर

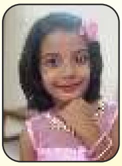

जिनधर्म की बेटी सम्यका, मुख पर हो मुस्कान।
मन मयूर भी नृत्य करे, जब भक्ति हो निष्काम।।

सम्यका मयूर जैन सन्चेती बैंगलोर 10 अक्टूबर

केवल ज्ञान आदित्य है, करता वस्तु प्रकाश।
हो प्रशांत जग जीव सब, हो सुख का आवास।।

आदित्य प्रशान्त जैन, बैंगलोर 09 अक्टूबर

जिनकुल में जन्मी हो बेटी, सीता जैसा धैर्य धरो।
श्री जिनेन्द्र की स्तुति करके, भव अभाव भाव धरो।

स्तुति श्री अरविन्द - राखी जैन, बण्डा जि. सागर 16 दिसम्बर

श्री जिनवर आशीष हो, हो निज प्रज्ञा काम ।
आत्म सत्ता की अनुज्ञा, जीवन हो निष्काम ।।

अनुज्ञा आशीष शास्त्री, टीकमगढ़ 23 अक्टूबर

यही अनुग्रह आपसे अनुनय कर कर जोड़ ।
निज में निज की अस्ति हो चलो मोक्ष ओर ।।

अनुग्रह आलोक जैन, आगरा, 7 अक्टूबर

आप भी अपने बच्चों के जन्मदिन पर शुभकामनायें प्रकाशित करवायें ।

प्लास्टिक का प्रयोग न बाबा न ....

प्लास्टिक के प्रयोग से स्वयं बचिये और देश, समाज और निरीह प्राणियों को बचाईये। देखिये इस गाय को। इसके पेट से किस तरह प्लास्टिक निकाला गया है। जिस देश में हिन्दू समाज जिस गाय को माँ कहा जाता है उसी देश में उस माँ का यह दुर्दशा। इस अपराध का जिम्मेदार कौन ? कहीं इस अपराध में आप भी तो शामिल नहीं....

देखिये ! प्लास्टिक किस प्रकार से पृथ्वी को नुकसान पहुँचा रही है। यह जमीन में दबकर एक परत बना लेती है, जिससे बारिश होने पर भी बारिश का पानी नीचे नहीं जा पाता और साथ ही मिट्टी की अनाज-फल पैदा करने की शक्ति समाप्त होती जा रही है। कुरकुरे, लेज आदि के प्रयोग किया जाने वाला पेपर को पूरी तरह समाप्त होने में 500 वर्ष लग सकते हैं।

इन बेजुबान जानवरों की पीड़ा का कोई अन्त नहीं ।
यदि हमने भी आत्मकल्याण नहीं करके
मायाचारी आदि पापों में जीवन बिताया तो हमारा
भविष्य भी ऐसा हो सकता है ।

इसलिये

सावधान....

बहु पुण्य संयोग मिला जीवन,
जिनश्रुत जिनदेव चरण दर्शन ।
हो सम्यग्दर्शन प्राप्त मुझे
तो सफल बने मानव जीवन ।।

चित्रों से समझिये

आओ पार्टी करें....

बेटों द्वारा बांधे गये माँ-बाप

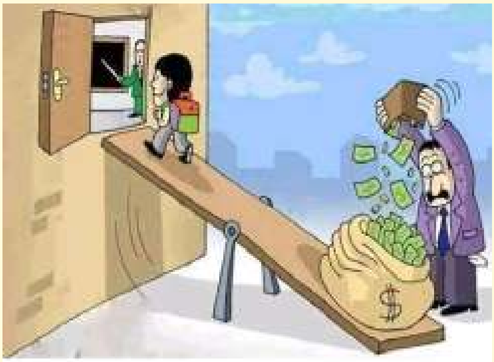

पिता का उपकार कभी नहीं भूलिये

जीवन के इस पड़ाव पर भी संघर्ष

अवश्य पधारिये महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में आयोजित तपोभूमि पोन्नूर

जिनदेशना आध्यात्मिक शिविर

शुक्रवार, 21 फरवरी से मंगलवार 25 फरवरी 2020 तक

विद्वत सान्निध्य - पं. शैलेष भाई शाह अहमदाबाद ◆ पं. नीलेशभाई शाह मुम्बई

विशेष आकर्षण :- ◈ आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन ◈ सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना ◈ पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ◈ अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 7000104951 email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 21 फरवरी को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर चेन्नई से 130 किमी, बैंगलोर से 360 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है। चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर के लिये सरकारी बस क्रमांक 104, 130, 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सपर्क करें :
पौन्नूरमलै : 9489360976, मो. 09976975074
चैन्नई संपर्क : श्री दीपक कामदार : 09383370033

चहकती चेतना 2020-21 के रंगीन केलेण्डर में विज्ञापन देकर सहभागी बनिये।

सम्पूर्ण विश्व की एक मात्र लोकप्रिय बाल-किशोर वर्ग की पत्रिका चहकती चेतना विगत 13 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। साथ ही इसका रंगीन वार्षिक केलेण्डर भी प्रकाशित होता रहा है। **इस वर्ष भी वर्ष अप्रेल 2020 से मार्च 2021 तक के केलेण्डर** की प्रकाशन का प्रथम चरण प्रारम्भ हो गया है। इस रंगीन केलेण्डर प्रतिवर्ष नये प्रयोग पूर्वक नई परिकल्पनाओं के आधार से चित्र प्रकाशित किये जाते हैं। 3000 **की संख्या में प्रकाशित होने वाला** यह तिथि केलेण्डर के साथ-साथ ज्ञान वृद्धि में भी निमित्त बनता है।

आप अपनी संस्था, फर्म, ट्रस्ट अथवा व्यक्तिगत नाम से विज्ञापन देकर इसमें प्रकाशन सहभागी बन सकते हैं। **विज्ञापन देने के इच्छुक 700104951 पर संपर्क करें। आशा है आप इस महनीय कार्य में सहभागी बनेंगे।**

चहकती चेतना के अन्तर्गत

जन्मदिवस उपहार योजना

आपके बच्चों का जन्म दिवस
हम बनायेंगे यादगार
भेजेंगे उपहार और शुभकामनायें अपार
तो देर किस बात की
आज ही इस योजना के

सदस्य बनिये

आप पायेंगे **तीन उपहार**

अपने जन्मदिवस के 10 दिन पूर्व

आपके नाम पर लिखी कविता के साथ एक सुन्दर मोमेन्टो, एक आकर्षक उपहार
साथ ही एक प्यारा सा ग्रीटिंग कार्ड
जिसमें होगी जन्म दिवस मनाने की सुन्दर विधि

शुल्क मात्र 500/- एक वर्ष हेतु

आप स्वयं सदस्य बनें और आप अपनी ओर से अपने रिश्तेदारों, सम्बन्धियों को भी सदस्य बनाकर उन्हें सरप्राइज दे सकते हैं। इस उपहार में भेंटकर्ता के रूप में आपका नाम होगा। आप आप सदस्यता राशि पेटीएम 9300642434 से या हमारे बैंक खाते में जमा कर हमें अपना पूरा पता, व्हाट्सएप या एसएमएस करें।

संचालक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर

मोबाइल लाइफ केयर चिप

MOBILE LIFE CARE CHIP

- क्या आप जानते हैं कि बच्चों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला मोबाइल कितना घातक हो सकता है
- क्या आप जानते हैं कि अधिक देर तक मोबाइल के प्रयोग से हमारे दिमाग की हजारों कोशिकायें नष्ट हो जातीं हैं
- क्या आप जानते हैं मोबाइल का रेडियेशन बच्चों के लिये कितना खतरनाक है
- मोबाइल की तरंगे मतलब दिल के लिये खतरा
- मोबाइल मतलब ब्रेन ट्यूमर और कैंसर से घातक बीमारी देने वाला यंत्र

घबराईये नहीं, हमारा उद्देश्य आपको डराना नहीं बल्कि बचाना है

इन सब समस्याओं से बचने का सर्वोत्तम उपाय अनेक वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित

मोबाइल लाइफ केयर चिप अपने फोन के पीछे लगाईये और रेडियेशन पर कंट्रोल कीजिये

मात्र 650/- रु. में घर बैठे पाईये और सात साल तक निश्चिंत हो जाईये

सम्पर्क - 7000104951 (Whatsapp No.)